भोरी तूं न भूल इंद्रावती, ऐसा पिउ का समया पाए।
तूं ले धनी अपना, औरों जिन देखाए।। १ ।।

हे भोली इन्द्रावती! तूने ऐसा सुन्दर समय प्राप्त किया। पिया को भूलना नहीं। तुम धनी को अपना लो और औरों को मत दिखाओ।

तोहे यों धनी कब मिलसी, पेहेचान के ले सोहाग।
ऐसी एकांत कब पावेगी, अब है तेरा लाग।। २ ।।

हे इन्द्रावती! तुझे इस तरह से धनी कब मिलेंगे? तू अपने धनी को पहचान कर सुख ले। ऐसा एकान्त समय भी कब पाएगी? अब तो तेरे सुख लेने का समय है। मौका तेरे हाथ है।

बोहोत वखत भला पाइया, धनिऐं दियो तुझे आप।
मेहेर करी मेहेबूबें, करके संग मिलाप।। ३ ।।

हे इन्द्रावती! धनी तुझ पर कृपा करके तुझ से मिले हैं। ऐसा सुन्दर मौका धनी ने खुद दिया है।

आंखां खोल के ढांपिए, जिन चूके एती बेर।
रात दिन तेरे राज का, सूत कात सवा सेर।। ४ ।।

आंखें खोलकर मूंदने में जितना समय लगता है, उतना समय भी नहीं गंवाना चाहिए। अपने धनी को रिझाने के लिए रात-दिन सवा सेर (किलो) सूत कातो।

नेह कर तूं नैनों से, और चसमें से कताए।
मिहीं सूत ले उजला, आओ आंखें कर पाए।। ५ ।।

तू इस वाणी से प्यार कर और ज्ञान का चश्मा लगाकर बारीक व उज्जवल सूत कात। ज्ञान से आंखें खोलकर धनी को पहचान लो और अपनी आंखों में प्रेम लेकर घर आओ।

भले कात्या इन सूत को, भला पाया ए बखत।
भले सो भागी नींदड़ी, भले मिले धनी इत।। ६ ।।

यह बहुत ही अच्छा समय मिला कि धनी हमको यहां मिले। हमारी नींद भाग गई जिससे इतना अच्छा सूत कात सकी।

धनी बिना ए नींदड़ी, टाल न सके कोई और।
वार डारों जीव देह सों, मोहे धनी मिले इन ठौर।। ७ ।।

धनी के बिना इस माया की नींद को कोई नहीं हटा सकता था। मैं अपने जीव और तन को धनी के चरणों पर कुर्बान करती हूं जो मुझे यहां आकर मिले हैं।

सई मेरी मुझ कारने, पिउजी दिए इत पाए।
मैं वारूं तिन पर आतमा, धनी आए जिन राहे।। ८ ।।

हे मेरी बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) पिया ने मेरे लिए माया का तन धारण किया। मैं उस रास्ते पर बलिहारी जाती हूं जिस रास्ते से धनी आए हैं।

सई तूं मेरा धनी ले बैठी, कोई और न देखनहार।
देख तूं पिउ लेऊं अपना, तो तूं कहियो सोहागिन नार।। ९ ।।

हे बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) तू गद्दी पर मेरे धनी के नाम को लेकर बैठी है। जहां कोई और पहचान करने वाला नहीं है। अब मैं अपने धनी को लेकर दिखाऊं तो मुझे सुहागिनी नारी कहना।

Nijanand App

इंद्रावती कहे तूं सई मेरी, धनी मिले मुझे इत।
पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, तू मेरी सखी है। सुन, धनी मुझे यहां माया में मिले हैं। मैंने जो जो चाहना परमधाम में की थी वह सब उन्होंने यहां पूरी कर दी है।

सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल।
करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मुझे सुन्दर लाड़ले धनी मिल गए हैं। मुझे उन्होंने अविधार (अंगीकार) कर सुहागवंती बनाया है। अब मैं असीम प्रसन्न हूं।

मैं एक विध मांगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन।
बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन।।। १२ ।।

मैंने तो धनी से एक ही बात मांगी थी (कि मुझे धाम क्यों नहीं दिखता)। अब धनी ने आकर कुल वाणी ही मेरे अन्दर रख दी। अब इस ज्ञान की बातें घर चलकर करेंगे।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६६२ ।।

लखमी जी को दृष्टांत

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं।
ए सुख और काहूं ना देऊ, फेर फेर तुमको काहे को कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे मन में इच्छा है कि धनी को अपने तन में बिठाकर अकेली ही आनन्द लूं और यह सुख किसी और को न दूं। हे साथजी! मैं तुमको बार-बार जगाने को क्यों कहूं और यह सुख मैं किसी को क्यों दूं?

ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए।
एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं।। २ ।।

यह वचन इस तरह से नहीं कहे जाते। इनको कहने से जीव बड़ा दुःखी होता है। यह जबान पर ही नहीं आते। इसकी मैं बहुत चिन्ता करती हूं, किन्तु माया का मेरा यह तन इन वचनों को पकड़कर हृदय में नहीं छिपा सकता।

धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो यह कहती हूं, नहीं तो यह सुख किसी और को क्यों दूं? यह धनी की वाणी मेरे जीव के अन्दर रहती है। इस वाणी को कहते ऐसा लगता है जैसे मेरा जीव ही निकल जाएगा।

ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर।
मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

इस वाणी (न्यामत) को मैंने धनी के चरणों को चित्त में लेकर बड़ी कठिनाई से पाया है और इसे बहुत छिपाना चाहती हूं, पर सागर के पूर (प्रवाह) की तरह यह वाणी घर की सुध देती है।

ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए।। ५ ।।

यह वाणी मेरे धनी मेरे अन्दर बैठकर स्वयं कह रहे हैं। मेरे शरीर को मात्र शोभा दे रहे हैं, नहीं तो यह वाणी इतनी सरलता से नहीं कही जाती। मेरे कलेजे में चोट लगती है।

Nijanand App